श्री दिगम्बर जैन स्वाध्यायमंदिर ट्रस्ट, सोनगढ अंतर्गत

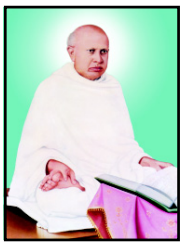

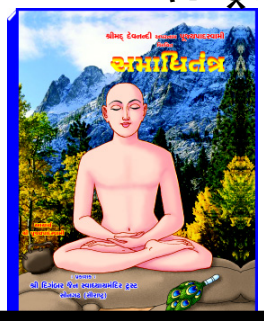

समाधितंत्र अध्ययन वर्ष

सौजन्य : मातुश्री ललिताबेन व्रजलाल शाह परिवार, जलगांव

प्रश्नपत्र क्रमांक - २ (कुल मार्कस–५०)

अभ्यासक्रम : **समाधितंत्र : गाथा १६ से २१**

परीक्षार्थीका नाम: ..... उम्र वर्ष : .....

मंडलका नाम : ..... गाँवका नाम : .....

फोन नंबर : ..... ता. २०-७-२०१८

सूचना : (१) प्रश्नोंके उत्तर समाधितंत्रके आधार पर देने होंगे।

प्रश्न-१ : नीचे दिये गये प्रश्नोंमेंसे कोई भी बारह पश्नोंके उत्तर दिजीये। (दो लाईनमें) ३६

(१) अनादिकालसे किसे भूलकर विषयोंमें पतित हुआ हूँ ऐसा माननेसे मैंने स्वयंको कैसा माना ?

(२) उपरोक्त प्रकारसे कौन विचार करता है ?

(३) बहिरंग जल्प क्या है ?

(४) अंतरंग जल्प क्या है ?

(५) योग अर्थात् समाधि क्या है ?

(६) मात्र विकल्प किया करे और क्या न करे वह कल्पना जाल है ?

(७) ग्रंथकार आचार्यदेव अन्यके साथ बातचीत करनेकी क्यों मना करते हैं ?

(८) दूसरोंको पढ़ाना और दूसरेसे पढ़नेके भावको आचार्यदेव क्या कहते है ? वह किस प्रकारका दोष है ?

(९) 'मैं कौन हूँ ? कैसा हूँ ?

(१०) शरीरादिमें अज्ञानी किस प्रकारकी चेष्टा करता है ? उसके लिये कौनसा दृष्टांत दिया है ?

(११) सूके हुए वृक्षमें पुरुष है ऐसी कल्पनाको किस प्रकार त्याग करता है ?

(१२) किसके अभावसे मैं सोये हुए की तरह अज्ञानावस्थामें था ?

(१३) शरीरादि बाह्य पदार्थोंसे दूसरा कोई भयका स्थान नहीं है किसे ? और क्यों ?

(१४) उन सर्व इन्द्रियोंको रोककर स्थिर हुए को कितना समय अनुभव करनेवालेको भासित होता है ? वे परमात्माका स्वरूप क्या है ?

(१५) मैं ही परमात्मा हूँ इसलिये मैं क्या करनेयोग्य हूँ ? किसके द्वारा ?

प्रश्न-२ : नीचे दिये गये प्रश्नोंमेंसे कोई भी दो प्रश्नके उत्तर दिजीये । (पांच-छह लाईनमें) ८

(१) मैं स्त्री, पुरुष अथवा नपुसक नहीं हूँ ऐसा कौन सोचता है ? तो मैं कैसा हूँ ?

(२) रागादि दोष किसके द्वारा नाशको प्राप्त होते हैं ? इसलिये क्या कोई मेरा शत्रु नहीं है ?

(३) मेरा कोई शत्रु या मित्र नहीं है ? अन्यको मैं कब मेरे शत्रु व मित्र न मानु ?

प्रश्न-३ : रिक्त स्थानकी पूर्ति किजीये । ४

(१) बाह्य विकल्प और अंतरंग विकल्पका त्याग ..... है ।

(२) अंतरंगमें अनेक प्रकारकी कल्पनाजाल है । वे आत्माको .... है ।

(३) अंतरात्मा विचारते हैं कि किसीके साथ बोलना अथवा वचन व्यवहारकी प्रवृत्ति करना वह ..... है ।

(४) आत्माको परद्रव्यके ग्रहण-त्याग करना वह तो व्यवहारनय ..... है ।

प्रश्न-४ नीचे दिये गये विषय पर निबंध लिखे । (बीस लाईन) ६

(१) बहिरात्माको त्याग कर अंतरात्माको किस प्रकार भजे ।

नोंध : कृपया प्रश्नपत्र-२ के उत्तरपत्र ता. १०-१०-२०१८ तक सोनगढ़ पहुँचे इस प्रकारसे भेजे ।